प्रातः क्लास 5-3-68 ओमशान्ति पिताश्री मधुबन

ओमशान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। क्योंकि बहुत बेसमझ बन गये थे। 5000 वर्ष पहले भी तुमको समझाया था। और देवी कर्म भी सिखलाये थे। तुम देवी धर्म में भी आये थे। ड्रामा प्लैन अनुसार पुनर्जन्म लेते और कलायें कमती होते 2 यहां प्रैक्टीकल बिलकुल ही नि:कला हो गई है। क्योंकि यह है ही तमोप्रधान खण्ड रावण राज्य। यह रावण भी पहले सतोप्रधान था फिर सतोप्र से तमो बना है। अभी तो बिलकुल ही तमोप्रधान है। अभी इनकी अन्त है। रावण राज्य को कहा ही जाता है आसुरी राज्य। खास भारतवासी बिलकुल ही तमोप्रधान बन गये हैं। रावण को जलाने का फैशन भी यहां ही निकला है। रामराज्य और रावण राज्य भारतवासी ही कहते हैं। रामराज्य त्रेता ही है सतयुग में। रावण राज्य है कलियुग में। यह बड़ी समझ की बात है। बाबा को तो बन्दर लगता है। अच्छे 2 बच्चे पूरे न समझने कारण अपने तकदीर को लकीर लगा देते हैं। जैसे यह ओमप्रकाश है कितना अच्छा सयाना समझू है बहुत फर्स्ट क्लास सर्विस कर सकते हैं, अपना भाग्य बहुत ऊंच बना रहा सकते हैं। परन्तु रावण के अवगुण है उनको चटक पड़े हैं। देवीगुणों का खुद भी वर्णन करते हैं। बाबा ने समझाया है तुम वही देवता थे। तुम ने ही 84 जन्म भोगे हैं। तुमको पर्क बताता हूं तुम क्यों तमोप्रधान बने हो। यह है रावण राज्य। रावण है सब से बड़ा दुश्मन। जिसने ही भारत को कितना कंगाल तमोप्रधान बनाया है। आसुरी गुण दिये हैं। बाप कहते हैं यह हैं आसुरी सम्प्रदाय। किसको कहो तो गाली देने, पत्थर मारने लग पड़ते। विघ्न डालते हैं। कल्प पहले भी विघ्न डालते थे। उनको कुछ पता थोड़े ही पड़ता है हम आसुरी सम्प्रदाय हैं वा क्या है। रावण को सब जलाते रहते हैं। अरे अभी तो है ही कलियुग। फिर इनको रामराज्य कैसे कहेंगे। किसने रामराज्य स्थापन किया। कौन कहेंगे गांधी ने रामराज्य स्थापन किया है। और ही कलियुगी तमोप्रधान हुआ है। रामराज्य में इतने आदमी थोड़े ही होते हैं। वहां तो एक धर्म होता है। इस समय तो सभी मनुष्यों में भूतों की प्रवेशता है। काम का भूत, क्रोध का भूत, मोह का भूत अशुद्ध अहंकार का भूत का है ना। हम अविनाशी आत्मा हैं। यह शरीर तो विनाशी चीज है। यह भूत जाते हैं। आत्म-अभिमानी बनते ही नहीं। देहअभिमानी बहुत है। देह-अभिमान आत्म अभिमान में कितना फर्क है। आत्माभिमानी देवी-देवतायें सारे विश्व के मालिक बन जाते हैं। देहअभिमानी होने से कंगाल बन जाते हैं। भारत सोने की चिड़िया थी। भल कहते भी हैं परन्तु समझते नहीं हैं। जैसे बेटक अथवा बुलबुल आदि आवाज करते हैं। वैसे यह भी कुछ समझते नहीं हैं। रामायण बैठ पढ़ते हैं बिलकुल नानसेन्स। सारी रामायण में गालियां ही गालियां हैं। रामचन्द्र को। बिचारे की इज्जत ही गवांये दी है। किसकी स्त्री चली जाये यह इज्जत गंवाई हुई ना। सो भी रावण चुरा ले गया। उस समय रावण कहां से आया। रावण का पुतला बनाये फिर कहानियां आदि बैठ सुनाते यह हुआ यह हुआ। नानसेन्स ड्रामा है ना। शिव बाबा आते ही हैं देवी ड्रामा बनाने। बाप कहते हैं मीठे 2 बच्चों तुमको हम विश्व का मालिक बनाता हूं। यह ल०ना० विश्व के मालिक थे। कब सुना? इन्हों को राजाई किसने दी? इन्हों ने कौन सा कर्म किया जो इतना ऊंच पद पाया। कर्मों की बात है ना। मनुष्य आसुरी कर्म करते हैं जो विकर्म विनाश हो जाते हैं। सतयुग में कर्म अकर्म होते हैं। वहां विकर्मों का खाता होता ही नहीं। बाप समझाते हैं आसुरी सम्प्रदाय न समझने कारण कितने विघ्न डालते हैं। कह देते हैं शिव शंकर एक ही है। अरे शिव शंकर तो अलग है। यह शिव निराकार अकेला दिखाते हैं, शंकर के साथ पार्वती दिखाते हैं। दोनों की एक्टीविटी एकदम अलग। प्राईम मिनिस्टर प्रेजीडेन्ट को एक थोड़े ही कहेंगे। दोनों का कर्तव्य बिलकुल अलग। तो शिव और शंकर को तुम एक कैसे कहते हो। यह भी जानते हैं रामसम्प्रदाय में आना ही न है तो जैसे समझते ही नहीं। आसुरी सम्प्रदाय तो गालियां ही देंगे। पत्थर मारेंगे। तमोप्रधान हैं ना। अभी विघ्न ही डालते हैं। उन में 5 विकार हैं। देवतायें तो हैं सम्पूर्ण निर्विकारी। उन्हों का कितना ऊंच पद है। अभी तुम समझते हो हम कितने विकारी थे। विकार से ही पैदा होते हैं ना। सन्यासियों को भी विकार से पैदा

पैदा होना ही है। माता के गर्भ से जन्म लेकर सन्यास करते हैं। सतयुग में तो यह बातें ही नहीं होतीं। कोई सतयुग के वासी थोड़े ही हैं। सतयुग को भी समझते नहीं। कई तो कह देते सतयुग सदैव है ही है। जैसे कहते कृष्ण तो हाजरा हजूर ही है। राधे भी हाजरा हजूर है। अनेक मत मतान्तर अनेक धर्म हैं। परन्तु यह सब हैं आसुरी। आया कल्प देवी मत चलती है। जो अभी तुमको मिल रहा है। तुम ही ब्रह्मा वंशी, सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी भी बनते हो। यह दोनों डिनायस्टी और एक ब्राह्मणों का कुल होता है। इनको डिनायस्टी नहीं कहेंगे। ब्राह्मणों की राजाई होती नहीं। यह भी तुम जानते हो। यह भी कोई2 समझते हैं। कई तो बिलकुल सुनते ही नहीं। कोई न कोई भूत तो है ही। सतयुग में कोई भी भूत होता नहीं। कलियुग के बाद सतयुग आता है वहां होते ही हैं देवतायें। बहुत सुखी होते हैं। भूत ही दुःख देते हैं। काम भूत आदि मध्य अन्त दुःख देते हैं। तो इसमें बहुत मेहनत करनी है। मासी का घर नहीं है। ल०ना० जैसा बनना है तो सर्वगुण सम्पन्न ... बनना है। बाप समझाते रहते हैं भाई बहन समझो। तो क्रिमनल दृष्टि नहीं जायेगी। हर बात हिम्मत चाहिए। कोई2 कह देते हैं शादी न करेंगे तो निकलो घर से बाहर। तो हिम्मत चाहिए ना। सब कुछ जांच भी की जाती है। तुम बच्चे तो अभी बहुत2 पदमभाग्यशाली बन रहे हो। जानते हो यह सब कुछ खत्म हो जायेगा सब मिट्टी में मिल जाना है। कोई तो अच्छी हिम्मत रख चल पड़ते हैं। कोई तो हिम्मत रख फेल भी हो जाते हैं। बाबा हर बात में अच्छी रीत समझते रहते हैं। बाबा ने कितना समझाया है रोते2 पत्र न बनाकर प्रजापर्चा पर्चा छपाओ। कलियुगी आसुरी सम्प्रदाय हो या सतयुगी आसुरी सम्प्रदाय हो? परन्तु अभी तक बम्बई देहली कलकत्ता कोई की बुद्धि में नहीं बैठा है। हैदराबाद वालों ने 3 पर्चे छपा कर बाबा को भेज दिये हैं। बिल्कुल सेम्पुल कमाल की है। किस में कोई की बुद्धि में किस में की बुद्धि अच्छा काम करता है। नहीं करते हैं तो फिर समझा जाता है योग पूरा न है। भारत का प्राचीन राजयोग ही मशहूर है। इस योग से ही तुम विश्व के मालिक बनते हो। पढ़ाई है तीन ओर इनकम। पढ़ाई से नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तुम ऊंच पद पाते हो। देहीअभिमानी हो रहना बड़ा मुश्किल है। मुश्किल कोई इक्कर सकते हैं। बहिन को भी देखने से दिल होती है उनको भाकी पहनूं। काया लगाऊं बहुत रिपोर्टस आती हैं? भाई बहिन के सम्बन्ध में भी बुद्धि चलायमान हो जाती है। इसलिए बाप इससे भी उच्च ले जाते हैं। अपने को आत्मा समझो दूसरे को भी आत्मा भाई समझो। हम सब भाई2 हैं। तो दूसरे को ई दृष्टि जायेगी नहीं। शरीर से देखने से ही क्रिमनल ख्यालात होती हैं बाप कहते हैं बच्चे अशरीरी भव-देहीअभिमानी भव। अपने को आत्मा समझ आत्मा अविनाशी है शरीर से पार्ट बजाती है। पार्ट बजाया फिर शरीर से अलग हो जाना है। कपड़ा उतार देना चाहिए। वह एक्ट पार्ट पूरा कर कपड़े बदली कर देते हैं। तुम को तो यह पुराना कपड़ा उतार नया कपड़ा पहनना है। आत्मा तमोप्रधान है तो शरीरी भी तमोप्रधान है। तमोप्रधानआत्मा मुक्ति में जा नहीं सकती। पवित्र होकर जाये। अपवित्र आत्मा वापस जा नहीं सकती है। यह तो झूठ बोलते हैं फलाना ब्रह्म में लीन हुआ यह हुआ एक भी जा नहीं सकते। वही जैसे तिजरा बना हुआ है। वैसे ही रहता है। यह तुम ब्राह्मण बच्चे ही जानते हो। गीता में ब्राह्मणों का नाम कुछ दिखाया नहीं है। यह तो दिखाया है प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश करता हूं तो जरूर रडाफान चाहिए ना। तो यह ब्राह्मण तो हैं विकारी। निर्विकारी बनने में भी कितने सितम सहन करनी पड़ती है। विश्व न मिलने से अपने को मारने लग पड़ते हैं। कि विश्व दो नहीं तो हम कूदते हैं। आंखों से यह नाम रूप देखने से बहुतों को विकल्प आते हैं। भाई बहिन के सम्बन्ध में भी गिर पड़ते हैं। लिखते हैं बाबा हम ने काला मूंह कर दिया। भाई बहिन क्लास हो और काला मूंह कर दे उनको तो जेल में डालना चाहिए। बाप ने कहा भाई-बहिन हो रहो। तुम ने यह बड़ा खराब काम किया। इसकी बड़ी भारी सजा मिल जाती है। जैसे कोई दूसरे को खराब करते हैं तो उनको जेल में डाल देते हैं। हिन्दुओं पास

5.3.68
प्रात क्लास

जाने से कोई जेल की बात नहीं होती। उनका तो धंधा ही यह है। भारत जिसे एतिहास था जो ये ने स्था किया था। उनका नाम ही है शिवालय। शिव बाबा ने ही स्थापन किया। यह ज्ञान भी कोई में है नहीं। शास्त्र आदि जो भी हैं वह सब हैं भक्ति कर्मकाण्ड के। इनमें ज्ञान कुछ है नहीं। और ही पतित बनते जाते ज्ञान से होती है सदगति। बाकी भक्ति के कर्म-काण्ड से से होती है दुर्गति। बाप कहते हैं इस बात में लड़ झगड़ने का क्या दरकार है। सदगति कहा ही जाता है सतयुग को। दुर्गति कहा जाता है कलियुग को। सतयु में सब सदगति में में हैं इसलिए कोई पुरुषार्थ भी नहीं करते। यहां सब गति-सदगति के लिए पुरुषार्थ करते क्योंकि दुर्गति में हैं। गंगा स्नान करने जाते हैं तो जरूर सदगति में है ना। गंगा का पानी थोड़े ही सदगति वा पतित से पावन बनायेगी। मनुष्य कुछ भी नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो समझते हैं। कोई समझते ही नहीं तो दूसरों को क्या समझायेंगे। इसलिए बाबा भेजता ही नहीं। गाते भी हैं बाबा आयेंगे तो हम आपे के ही मत पर चलेंगे। देवता बनेंगे। देवतायें रहते ही हैं सतयुग त्रेता में। परन्तु फिर भी दैवीगुण धारण नहीं करते हैं। आसुरी स्वभाव में ही चलते रहते हैं। सब से जास्ती है विकार। इन विकार तो मनुष्य रह नहीं सकते। यह विकार है माई-बाप का वर्सा। यहां तुमको मिलता है राम का वर्सा। पवित्रता का वर्सा मिलता है। वहां विकार की बात ही नहीं होती। श्रीकृष्ण के लिए भी समझाया है वह पावन था। वह ही फिर 84 जन्म से पतित बने हैं। सब भक्त लोग कहते हैं कृष्ण तो भगवान है। उनको तुम 84 जन्म में दिखाते हो। अरे भगवान तो निराकार। उनका नाम ही है शिव। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। तरस भी पड़ता है। रहम दिल है ना। यह कितना अच्छा तरसदार बच्चा है। मकान भी अच्छा है। ज्ञान और योग की ताकत है तो कशिश रखते हैं। पढ़े लिखे को आदर अच्छा मिलता है। अनपढ़े को आदर नहीं मिलता। यह तो जानते हैं सभी आसुरी सम्प्रदाय हैं। कुछ भी समझते नहीं। शिव और शंकर तो बिल्कुल ही अलायर है। वह है ही मूलवतन में। वह बीच में। सभी एक जैसे कैसे होंगे। सभी भगवान कैसे होंगे। यह तो तमोप्रधान दुनिया है। सभी को कुत्ते, बिल्ले, ठिकर-भितर में ईश्वर कह देते। अपने को भी आसुरी सम्प्रदाय समझते नहीं। रावण दुश्मन है आसुरी सम्प्रदाय का जो आप समान बना देते हैं। बाप फिर तुमको आप समान दैवी सम्प्रदाय बनाते हैं। वहां रावण होता ही नहीं। वहां थोड़े ही रावण को जलायेंगे। आधा कल्प बाद रावण राज्य होता है। आधा कल्प उनकी रहना है। मनुष्य कितने पत्थर ठिकर बुधि हैं। बाप की कितनी बे इनसल्ट ग्लानी करते हैं। भारतवासियों को देश और ही सर्व-व्यापी कह देते हैं। सब से जास्ती गिरते भी यह हैं। बाप कहते हैं भारत में जैसी सब से जास्ती ग्लानी करते हैं। ग्लानी करते2 एकदम पत्थर तुंधिल बन जाते हैं। तब ही मुझे आना पड़ता है। अभी तुम सुधर रहे हो। रामराज्य होता ही है सतयुग में। गांधी फिर रामराज्य कैसे कर सकते हैं। वह कोई कहते थे बे क्या कि आत्म-अभिमानी बनो। बाप तो संगम पर कहते हैं। यह है उत्तम से उत्तम पुरुष बनने का संगम। वह फिर सुनाते कैसे गांधी ने रामराज्यस्थापन किया। फिर उन से बच्चा नेहरू निकला। अभी विष्णु के नाभी से ब्रह्मा निकला यह भी समझते थोड़े ही हैं। वह तो और ही रावण राज्य को पक्का कर गये हैं। कितना पतित बन गये हैं। खूब आग लगाते पत्थर ठोकते रहते हैं। कैलेंडर बड़ी खराब है।

तो बाप कितना प्यार से समझाते हैं। पढ़ी कितना प्यार से बाप को याद करना चाहिए। बाबा आप की तो कमाल है। हम कितने पत्थर बुधि थे। आप हमको उंच बनाते हो। आप की मत बिगर हम और ही कोई के मत पर नहीं चलेंगे। पिछाड़ी को सब समझेंगे। ब्र बरोबर ब्रह्मा कुमारियां देवीमत पर चल रही है। कितनी अच्छी3 बातें सुनाती हैं। आदि मध्य अन्त का परिचय देती हैं। कैलेंडर कितना सुधारती हैं। कोई कहते हैं यह बिलकुल ठीक कहते हैं। बाप भी कहते हैं सभी को समझाओ। इन देवताओं का सतयुग में कैलेंडर कितना अच्छा था। कलियुग में कितना तमोप्रधान है। 84 जन्मों को कोई भी नहीं जानते हैं। किस

आसुरी सम्प्रदाय कहो तो बिगर पड़ते हैं। वेदा शास्त्र सब झूठे हैं। यह है ही झूठ खण्ड। झूठी बातें सुनते2 सब झूठे बन गये हैं। जहां सच्चे है वहां झू० की रत्ती नहीं। पतित होते ही हैं कलियुग में। इसलिए सब पुकारते हैं आकर पावन बनाओ। पावन बनने की शिक्षा बाप ही देते हैं। वह समझते हैं कलियुग पूरा होने में अजन 40 हजार वर्ष पड़े हैं। बाप कहते हैं कल्प की आयु ही 5000 वर्ष है। इस पर भी बिगड़ते हैं शास्त्र सब झूठे हैं। फिर भी तुम समझाते हो कोई समझते हैं कोई नहीं समझते हैं। जो यहां सेंटरिंग होंगे वही समझेंगे। इन सब विघ्नों से भी पार होना है। बाकी पाण्डवों कौरवों की लड़ाई कहो। देवतायें सतयुग में, असुर कलियुग में। उनकी फिर लड़ाई कैसे होगी। कितनी झूठी बातें हैं। स्थूल लड़ाई की तो बात ही नहीं। यह तो 5 विकारों से तुम्हारा युध है। इन में स्थूल हथियारों आदि का बात नहीं है। उन लड़ाई करने वालों को भी बाप समझाते हैं। बन्दूक चलाते ही शिव बाबा को याद करते रहो तो स्वर्ग में आ जायेंगे। स्वर्ग में तो अनेक प्रकार के मर्तबे हैं। राजा-रानी प्रजा दास-दासियां चण्डाल सब चाहिए ना। मुख्य बात है काम पर जीत पाना। इसलिए बाबा युक्ति भी बताते रहते हैं। भाई सम्बन्ध है तो भी ऊपर जाना है। अगर काला मुंह किया तो कला काया चट हो जायेगी। कुल को कलंकित बन पड़े ना। फिर बहुत पुरुषार्थ करना पड़े। फिर अला भी बनना पड़ता है। ऐसे नहीं समझो उनका वह जन्म है। नहीं वह कमाई की तो खत्म हो जाती है। फिर नई सिरे मेहनत करनी पड़े। बाप को बुलाते ही हैं कि आकर पतित तो पावन बनाओ। पतित माना ही विकारी। विकार पर ही कितने विघ्न पड़ते हैं। जबरदस्ती बांध कर भी गन्दे करते हैं। मार भी डालते हैं। सीढ़ी में भी दिखाया है ना असुर कहते हैं इनको बिल दो। नहीं देती है तो मारो लाठी। ऐसे बहुत होते हैं। कहते हैं ऐसा हालत देख मैं हम क्या करें। बाबा कहते हैं तुम्हारा दोष नहीं है। उनको सजा भी वह भोगेंगे। अगर तुम्हारी आत्मा है तो तुम भी दोषी हो। प्रजा की हालत में आ कर मारेंगे तो बाप पार्टिशिपेट सब देते रहते हैं। यह भी समझाया है जहां पूज्य हैं वहां पुजारी होते नहीं। शंकराचार्य को भी तुम लिख सकते हो कायदे मुजीब पूज्य को पुजारी कैसे कह सकते। तुम हो पुजारी। अव्यभिचारी से पैदा हुये हो ना। देवतायें तो योगबल से होते हैं। तुम अष्टाचार से पैदा हुये हो। नॉलेज इतना गुप्त कर दी है। तुम तो पुजारी हो ना। सतयुग में पुजारी होते नहीं। परन्तु वह तो सतयुग को ही नहीं मानते हैं। सतयुग में होते ही नहीं तो माने कैसे। वह हैं हठयोगी निवृत्ति मार्ग वाले। उनका धर्म ही अलग है। समझने से पहले ही माला जपने शुरू कर देते हैं। यह बन्धन है। कितना समझाया जाता है। 5 विकार भी कम नहीं है। इसमें भी मुख्य है काम। उनके आने से फिर सब आ जाते हैं। वह अपना वजीर अमीर सब साथ ले आते हैं। मेहनत है। जिस का अन्तिम मेहनत विगर थोड़े ही बन सकते हैं। मनुष्य तो झूठे मतवाले हैं। कहते थे सतयुग में यह सिर्फ देवतायें ही होंगे। ऐसे कब हो नहीं सकता। हमने कब सुना नहीं। जरूर हम सुनते हैं वेहद के बाप से। तुम तो सुनते ही हो असुरों से। तो यह सब बातें बहुत ही समझने की हैं।

कितनी ऊंच कमाई है। उस पर्दे में भी वाकायदा था दया। कोई की ताकत नहीं। जो बाबा से पहुंच सके जवाहरात आदि के काम में। यह भी अविनाशी ज्वाहर है। यह है विनाशी। तो बाप कहेंगे मेरे जैसे बनो। फालो करो। कितना सहज युक्ति बताते हैं। अपने को आत्मा समझो। पाईन्ट्स तो बहुत हैं। बाप कहते हैं अच्छी2 पाईन्ट अपने पास नोट कर दो। फिर भाषण करने वाले रिलायेबल बनो। इसे लिखना जरूरी है फिर दो तीन चार प्रैक्टीस करनी चाहिए। फिर जो पाईन्ट भूल जाये उनको रट करो। मेहनत करनी पड़े। इसमें भी देही-अभिमानी चाहिए। भल भाषण बहुत अच्छा करते हैं परन्तु योग है नहीं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों से रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। समझे।

:: ओमशान्ति ::

:: शिव बाबा याद है? ::